कृष्णयजुर्वेद-सन्ध्यावन्दनम्

अनुऋमणिका

| प्रातः सन्ध्यावन्दनम् | 6 |
|-----------------------|----|
| आचमनम् | 6 |
| विघ्नेश्वर-ध्यानम् | 7 |
| प्राणायामः | 7 |
| सङ्कल्पः | 7 |
| मार्जनम् | 8 |
| प्राशनम् | 8 |
| पुनर्मार्जनम् | 9 |
| अर्घ्यप्रदानम् | 10 |
| प्रायश्चित्तार्घ्यम् | 10 |
| ऐक्यानुसन्धानम् | 11 |
| देवतर्पणम् | 11 |
| जप-सङ्कल्पः | 13 |
| प्रणवजपः—प्राणायामः | 13 |
| गायत्री-आवाहनम् | 14 |
| गायत्री-जपः | 15 |
| गायत्री-उपस्थानम् | 15 |

| अनुक्रमणिका | 2 |
|-------------------------------|----|
| प्रातः सन्ध्या सूर्योपस्थानम् | 16 |
| समष्ट्यभिवादनम् | 16 |
| दिग्देवता-वन्दनम् | 17 |
| यम्-वन्दनम् | 18 |
| सर्प-रक्षा | 18 |
| हरिहर-वन्दनम् | 19 |
| सूर्यनारायण-वन्दनम् | 19 |
| समर्पणम् | 20 |
| रक्षा | 20 |
| माध्याह्निकम् | 21 |
| आचमनम् | 21 |
| विघ्नेश्वर-ध्यानम् | 22 |
| प्राणायामः | 22 |
| सङ्कल्पः | 23 |
| मार्जनम् | 23 |
| प्राशनम् | 24 |
| पुनर्मार्जनम् | 24 |
| अर्घ्यप्रदानम् | 25 |
| | |

| अनुक्रमणिका | 3 |
|----------------------------|----|
| प्रायश्चित्तार्घ्यम् | 25 |
| ऐक्यानुसन्धानम् | 26 |
| देवतर्पणम् | 26 |
| जप-सङ्कल्पः | 28 |
| प्रणवजपः—प्राणायामः | 28 |
| गायत्री-आवाहनम् | 29 |
| गायत्री-जपः | 30 |
| गायत्री-उपस्थानम् | 30 |
| माध्याह्निक सूर्योपस्थानम् | 31 |
| समध्यभिवादनम् | 32 |
| दिग्देवता-वन्दनम् | 32 |
| यम्-वन्दनम् | 33 |
| सर्प-रक्षा | 33 |
| हरि्हर-वन्दनम् | 34 |
| सूर्यनारायण-वन्दनम् | 34 |
| समर्पणम् | 36 |
| रक्षा | 36 |
| सायं सन्ध्यावन्दनम् | 36 |

| अनुक्रमणिका | 4 |
|-----------------------------|----|
| आचमनम् | 37 |
| विघ्नेश्वर-ध्यानम् | 38 |
| प्राणायामः | 38 |
| सङ्कल्पः | 38 |
| मार्जनम् | 38 |
| प्राशनम् | 39 |
| पुनर्मार्जनम् | 40 |
| अर्घ्यप्रदानम् | 41 |
| प्रायश्चित्तार्घ्यम् | 41 |
| ऐक्यानुसन्धानम् | 42 |
| देवतर्पणम् | 42 |
| जप-सङ्कल्पः | 44 |
| प्रणवजपः—प्राणायामः | 44 |
| गायत्री-आवाहनम् | 45 |
| गायत्री-जपः | 46 |
| गायत्री-उपस्थानम् | 46 |
| सायं सन्ध्या सूर्योपस्थानम् | 47 |
| समध्यभिवादनम् | 47 |
| | |

| अनुक्रमणिका | 5 |
|---------------------|----|
| दिग्देवता-वन्दनम् | 48 |
| यम्-वन्दनम् | 49 |
| सर्प-रक्षा | 49 |
| हरि्हर-वन्दनम् | 50 |
| सूर्यनारायण-वन्दनम् | 50 |
| समर्पणम् | 51 |
| रक्षा | 52 |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |

॥प्रातः सन्ध्यावन्दनम्॥ ॥आचमनम्॥

(कुक्कुटासने)

अच्युताय नमः। अनन्ताय नमः। गोविन्दाय नमः।

द्धिः परिमृज्य।

॥ अङ्गवन्दनम्॥

- १. केशव (touch right cheek with right thumb)
- २. नारायण (touch left cheek with right thumb)
- ३. माधव (touch right eye with right ring finger)
- ४. गोविन्द (touch left eye with right ring finger)
- ५. विणो (touch right nostril with right index finger)
- ६. मध्सूदन (touch left nostril with right index finger)
- ७. त्रिविक्रम (touch right ear with right little finger)
- ८. वामन (touch left ear with right little finger)
- ९. श्रीधर (touch right shoulder with right middle finger)
- १०. हपीकेश (touch left shoulder with right middle finger)
- ११. पद्मनाभ (touch navel with right four fingers)

१२. दामोदर (touch the centre of the head with all five fingers)

॥विघ्नेश्वर-ध्यानम्॥

भृगुः—अङ्गुलीपृष्ठभागाभ्यां कुट्टणं पञ्चवारकम्।

(strike gently on the temples five times with the back side of the fingers)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

॥ प्राणायामः ॥

ओं भूः। ओं भुवः। ओ॰ सुवः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओ॰ सृत्यम्॥ ओं तथ्संवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥ ओमापो ज्योती्रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं प्रातः सन्ध्यामुपासिष्ये।

॥मार्जनम्॥

ॐ श्री-केशवाय नमः।
आपो हि ष्ठा मेयो भुवेः।
ता ने ऊर्जे देधातन।
महरणाय चक्षंसे।
यो वेः शिवतमो रसंः।
तस्यं भाजयतेह नेः।
उश्तीरिव मातरंः।
तस्मा अरं गमाम वः।
यस्य क्षयाय जिन्वंथ।
आपो जनयंथा च नः॥

ओं भूर्भुवः सुवंः॥ (आत्म-परिषेचनम्)

॥ प्राशनम्॥

सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युंकृतेभ्यः। पापेभ्यों रक्षुन्ताम्। यद्रात्रिया पापंमकार्षम्। मनसा वार्चा हस्ताभ्याम्। पद्मामुदरेण शिश्ञा। रात्रिस्तदंवलुम्पतु। यत्किं चं दुरितं मियं। इदमहं माममृतयोनौ। सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥

॥ पुनर्मार्जनम्॥

आचमनम्।

द्धिकावणों अकारिषम्। जिष्णोरश्वंस्य वाजिनंः। सुर्भि नो मुखांकर्त्। प्रण आयूर्षेषे तारिषत्॥

आपो हि ष्ठा मंयो भुवंः। ता नं ऊर्जे दंधातन। महेरणाय चक्षंसे। यो वंः शिवतंमो रसंः। तस्यं भाजयतेह नंः। उशतीरिंव मातरंः।

तस्मा अरं गमाम वः।

यस्य क्षयांय जिन्वंथ। आपों जनयंथा च नः॥

ओं भूर्भुवः सुवंः॥ (आत्म-परिषेचनम्)

॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ओं भूर्भुवः सुवंः। तथ्संवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥

(एवं त्रिः)

॥ प्रायश्चित्तार्घ्यम्॥

प्राणायामः॥

(ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं प्रातः सन्ध्या) कालातीतप्रायश्चित्तार्थम् अर्घ्यप्रदानम् करिष्ये॥

ओं भूर्भुवः सुवंः। तथ्संवितुर्वरेंण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥

(आत्मप्रदक्षिणं परिषेचनं च)

॥ ऐक्यानुसन्धानम्॥

असावादित्यो ब्रह्म। ब्रह्मेवाहमस्मि॥

ध्यानम्॥

आचमनम्।

॥ देवतर्पणम्॥

॥ नवग्रहदेवता-तर्पणम्॥

- १. आदित्यं तर्पयामि।
- २. सोमं तर्पयामि।
- ३. अङ्गारकं तर्पयामि।
- ४. बुधं तर्पयामि।
- ५. बृहस्पतिं तर्पयामि।
- ६. श्क्रं तर्पयामि।
- ७. शनैश्चरं तर्पयामि।
- ८. राहुं तर्पयामि।
- ९. केतुं तर्पयामि।

॥ केशवादि-तर्पणम्॥

- १. केशवं तर्पयामि।
- २. नारायणं तर्पयामि।
- ३. माधवं तर्पयामि।
- ४. गोविन्दं तर्पयामि।
- ५. विष्णुं तर्पयामि।
- ६. मधुसूदनं तर्पयामि।
- ७. त्रिविक्रमं तर्पयामि।
- ८. वामनं तर्पयामि।
- ९. श्रीधरं तर्पयामि।
- १०. हृषीकेशं तर्पयामि।
- ११. पद्मनाभं तर्पयामि।
- १२. दामोदरं तर्पयामि।

आचमनम्।

॥इति प्रातः सन्ध्यावन्दन-पूर्वभागः॥

॥ सन्ध्यावन्दन-उत्तरभागः॥

॥ जप-सङ्कल्पः॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणायामः।

ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं प्रातः सन्ध्या-गायत्री-महामन्त्र-जपं करिष्ये।

॥प्रणवजपः—प्राणायामः॥

प्रणवस्य ऋषिर्ब्रह्मा। देवी गायत्री छन्दः। परमात्मा देवता। भूरादि-सप्त-व्याहृतीनाम् अत्रि-भृगु-कुत्स-वसिष्ठ-गौतम-काश्यप-अङ्गिरस ऋषयः।

गायत्री-उष्णिक्-अनुष्टुप्-बृहती-पङ्कि-त्रिष्टुप्-जगत्यः छन्दांसि।

अग्नि-वायु-अर्क-वागीश-वरुण-इन्द्र-विश्वदेवा देवताः। प्राणायामे विनियोगः॥

ओं भूः। ओं भुवः। ओ॰ सुवः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओ॰ सुत्यम्॥ ओं तथ्संवितुर्वरैण्युं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयाँत्॥ ओमापो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

॥ गायत्री-आवाहनम्॥

आयात्वित्यनुवाकस्य वामदेव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। गायत्री देवता।

आयांतु वरंदा देवी अक्षरं ब्रह्मसम्मितम्। गायत्रीं छन्दंसां मातेदं ब्रह्म जुषस्वं नः॥

ओजोंऽसि सहोंऽसि बलंमिस भ्राजोंऽसि देवानां धाम् नामांसि विश्वंमिस विश्वायुः सर्वंमिस सर्वायुरिभभूरों गायत्रीमावाहयामि सावित्रीमावाहयामि सरस्वतीमावाह-यामि सावित्र्या ऋषिर्विश्वामित्रः। निचृद्गायत्री छन्दः। सविता देवता।

गायत्री-जपे विनियोगः॥

॥ गायत्री-जपः॥

॥ध्यानम्॥

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवळच्छायैर्मुखैस्रीक्षणैः युक्तामिन्दु-निबद्ध-रत्न-मकुटां तत्त्वार्थ-वर्णात्मिकाम्। गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गदाम् शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥ यो देवः सविताऽस्माकं धियो धर्मादि-गोचरे। प्रेरयेत् तस्य यद्भर्गस्तद्वरेण्यमुपास्महे॥

ओं।

भूर्भुवः सुवंः। तथ्सवितुर्वरेणयम्।

भर्गों देवस्यं धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात्॥

प्राणायामः।

॥ गायत्री-उपस्थानम्॥

प्रातः सन्ध्या गायत्री उपस्थानं करिष्ये।

उत्तमे शिखंरे देवी भूम्यां पंवत्मूर्धनि। ब्राह्मणैभ्यो ह्यंनुज्ञानं गुच्छ देवि यथा सुंखम्॥

॥प्रातः सन्ध्या सूर्योपस्थानम्॥

मित्रस्यं चर्षणी धृतः श्रवों देवस्यं सान्सिम्। सृत्यं चित्रश्रंवस्तमम्॥ मित्रो जनान्ं यातयित प्रजानिन्त्रो दाधार पृथिवीमृतद्याम्। मित्रः कृष्टीरिनंमिषाभिचंष्टे सृत्यायं हृव्यं घृतवंद्विधेम॥ प्र समित्र मर्तों अस्तु प्रयंस्वान् यस्तं आदित्य शिक्षंति ब्रुतेनं। न हंन्यते न जीयते त्वोतो नैन्म हों अश्रोत्यन्तितो न दूरात्॥

॥ समष्ट्यभिवादनम्॥

सन्थ्याये नमः। (East) सावित्र्ये नमः। (South) गायत्र्ये नमः। (West) सरस्वत्ये नमः। (North)

सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमो नमः। (East)

कामोऽकार्षौन्मन्युरकार्षौन्नमो नमः।

अभिवादये () (त्रयार्षेय) प्रवरान्वित () गोत्रः

(आपस्तम्ब) सूत्रः यजुःशाखा अध्यायी

() शर्मा नामाहम् अस्मि भोः॥

नमस्कारः।

॥दिग्देवता-वन्दनम्॥

दक्षिणायै दिशे नमः। (South)

प्राच्ये दिशे नमः। (East)

प्रतीच्यै दिशे नमः। (West)

उदीच्ये दिशे नमः। (North)

ऊर्ध्वाय नमः। (up)

अधराय नमः। (down)

अन्तरिक्षाय नमः। (up)

भूम्यै नमः। (down)

ब्रह्मणे नमः। (up)

विष्णवे नमः। (down)

मृत्यवे नमः।

॥ यम-वन्दनम्॥

यमाय नमः (South)

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च। वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च॥ औदुम्बराय दभ्नाय नीलाय परमेष्ठिने। वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः॥

चित्रगुप्ताय वै नम ओं नम इति॥

॥ सर्प-रक्षा॥

(North)

नर्मदायै नमः प्रांतर्नर्मदायै नमो निशि। नमोऽस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विषसर्पतः॥ सर्पापसर्प भद्रं ते गच्छ सर्प महाविष। जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मरन्॥ जरत्कारोर्जरत्कार्वां समुत्पन्नो महायशाः। अस्तीकः सत्यसन्थो मां पन्नगेभ्योऽभिरक्षतु॥

पन्नगेभ्योऽभिरक्षत्वोन्नम इति॥

॥हरिहर-वन्दनम्॥

(North)

ऋत र स्त्यं पेरं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गंलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमंः॥ विश्वरूपाय वै नम ओं नम इति॥

॥ सूर्यनारायण-वन्दनम्॥

(East)

नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे
जगत्प्रसूति-स्थिति-नाश-हेतवे।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे
विरिश्चि-नारायण-शङ्करात्मने ॥
ध्येयः सदा सवितृमण्डल-मध्यवर्ती
नारायणः सरिस-जासन-सन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचकः॥
शङ्ख-चक्र-गदापाणे द्वारकानिलयाच्युत।
गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागतम्॥

आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति॥

श्री केशवं प्रतिगच्छत्यों नम इति॥

अभिवादये () (त्रयार्षेय) प्रवरान्वित () गोत्रः (आपस्तम्ब) सूत्रः यजुःशाखा अध्यायी

() शर्मा नामाहम् अस्मि भोः॥

नमस्कारः।

॥ समर्पणम् ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

आचमनम्।

॥ रक्षा ॥

अद्या नो देव सवितः प्रजावंथ्सावीः सौभंगम्। परां दुःष्वप्निय स्व। विश्वांनि देव सवितर्दुरितानि परां सुव। यद्भद्रं तन्म आ सुव। ॥इति प्रातः सन्ध्यावन्दन-उत्तरभागः॥

॥ माध्याह्निकम्॥ ॥ आचमनम्॥

(कुक्कुटासने)

अच्युताय नमः। अनन्ताय नमः। गोविन्दाय नमः।

द्विः परिमृज्य।

॥ अङ्गवन्दनम्॥

- १. केशव (touch right cheek with right thumb)
- २. नारायण (touch left cheek with right thumb)
- ३. माधव (touch right eye with right ring finger)
- ४. गोविन्द (touch left eye with right ring finger)
- ५. विणा (touch right nostril with right index finger)
- ६. मधुसूदन (touch left nostril with right index finger)
- ७. त्रिविक्रम (touch right ear with right little finger)

- ८. वामन (touch left ear with right little finger)
- ९. श्रीधर (touch right shoulder with right middle finger)
- १०. हपीकेश (touch left shoulder with right middle finger)
- ११. पद्मनाभ (touch navel with right four fingers)
- १२. दामोदर (touch the centre of the head with all five fingers)

॥विघ्नेश्वर-ध्यानम्॥

भृगुः—अङ्गुलीपृष्ठभागाभ्यां कुट्टणं पञ्चवारकम्।

(strike gently on the temples five times with the back side of the fingers)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

॥ प्राणायामः ॥

ओं भूः। ओं भुवः। ओ॰ सुवः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओ॰ सृत्यम्॥ ओं तथ्संवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥ ओमापो ज्योती्रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा माध्याह्निकं करिष्ये। श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं

॥ मार्जनम्॥

ॐ श्री केशवाय नमः।
आपो हि ष्ठा मंयो भुवंः।
ता नं ऊर्जे दंधातन।
महेरणांय चक्षंसे।
यो वंः शिवतंमो रसंः।
तस्यं भाजयतेह नंः।
उशतीरिंव मातरंः।
तस्मा अरं गमाम वः।
यस्य क्षयांय जिन्वंथ।
आपो जनयंथा च नः॥

ओं भूर्भुवः सुवंः॥ (आत्म-परिषेचनम्)

॥ प्राशनम्॥

आपंः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मण्स्पति ब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्ट्मभौज्यं यद्वी दुश्चरितं ममं। सर्वं पुनन्तु मामापोऽस्तां चे प्रतिग्रह्ध् स्वाहां॥

॥ पुनर्मार्जनम्॥

आचमनम्।

द्धिकारणां अकारिषम्। जिष्णोरश्वंस्य वाजिनंः। सुर्भि नो मुखांकर्त्। प्रण आयूर्षेषि तारिषत्॥

आपो हि ष्ठा मंयो भुवंः। ता न ऊर्जे दंधातन। महेरणांय चक्षंसे। यो वंः शिवतंमो रसंः। तस्यं भाजयतेह नेः। उशतीरिंव मातरः।

तस्मा अरं गमाम वः।

यस्य क्षयांय जिन्वंथ। आपों जनयंथा च नः॥

ओं भूर्भुवः सुवंः॥ (आत्म-परिषेचनम्)

॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ओं भूर्भुवः सुवंः। तथ्संवितुर्वरैण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥

(एवं द्विः)

25

॥प्रायश्चित्तार्घ्यम्॥

प्राणायामः॥

(ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं माध्याह्निक) कालातीतप्रायश्चित्तार्थम् अर्घ्यप्रदानम्

करिष्ये॥

ओं भूर्भुवः सुवंः। तथ्संवितुर्वरैण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥ (आत्मप्रदक्षिणं परिषेचनं च)

॥ ऐक्यानुसन्धानम्॥

असावादित्यो ब्रह्म। ब्रह्मैवाहमस्मि॥ ध्यानम्॥ आचमनम्।

॥देवतर्पणम्॥

॥ नवग्रहदेवता-तर्पणम्॥

- १. आदित्यं तर्पयामि।
- २. सोमं तर्पयामि।
- ३. अङ्गारकं तर्पयामि।
- ४. बुधं तर्पयामि।
- ५. बृहस्पतिं तर्पयामि।
- ६. शुक्रं तर्पयामि।

देवतर्पणम् (माध्याह्निकम्)

- ७. शनश्चर तपयााम
- ८. राहुं तर्पयामि।
- ९. केतुं तर्पयामि।

॥ केशवादि-तर्पणम्॥

- १. केशवं तर्पयामि।
- २. नारायणं तर्पयामि।
- ३. माधवं तर्पयामि।
- ४. गोविन्दं तर्पयामि।
- ५. विष्णुं तर्पयामि।
- ६. मधुसूदनं तर्पयामि। ७. त्रिविक्रमं तर्पयामि।
- 9. 171979 (199119
- ८. वामनं तर्पयामि।
- ९. श्रीधरं तर्पयामि।
- १०. हृषीकेशं तर्पयामि। ११. पद्मनाभं तर्पयामि।
- १२. दामोदरं तर्पयामि।

आचमनम्।

॥इति माध्याह्निक-पूर्वभागः॥

॥ सन्ध्यावन्दन-उत्तरभागः॥

॥ जप-सङ्कल्पः॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणायामः।

ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं माध्याह्निक-गायत्री-महामन्त्र-जपं करिष्ये।

॥ प्रणवजपः—प्राणायामः॥

प्रणवस्य ऋषिर्ब्रह्मा। देवी गायत्री छन्दः। परमात्मा देवता। भूरादिसप्त व्याहृतीनाम् अत्रि-भृगु-कुत्स-वसिष्ठ-गौतम-काश्यप-आङ्गिरस ऋषयः।

गायत्री-उष्णिक्-अनुष्टुप्-बृहती-पङ्की-त्रिष्टुप्-जगत्यः छन्दांसि।

अग्नि-वायु-अर्क-वागीश-वरुण-इन्द्र-विश्वेदेवा देवताः। प्राणायामे विनियोगः॥ ओं भूः। ओं भुवः। ओ॰ सुवः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओ॰ सृत्यम्॥ ओं तथ्मंवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥ ओमापो ज्योती्रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुव्रोम्॥

॥गायत्री-आवाहनम्॥

आयात्वित्यनुवाकस्य वामदेव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। गायत्री देवता।

आयांतु वरंदा देवी अक्षरं ब्रह्मसम्मितम्। गायत्रीं छन्दंसां मातेदं ब्रह्म जुषस्वं नः॥

ओजोंऽसि सहोंऽसि बलंमसि भ्राजोंऽसि देवानां धाम् नामांसि विश्वंमसि विश्वायुः सर्वमिस सर्वायुरिभभूरों गायत्रीमावांहयामि सावित्रीमावांहयामि सरस्वतीमावांह-यामि सावित्र्या ऋषिर्विश्वामित्रः। निचृद्गायत्री छन्दः। सविता देवता।

गायत्री-जपे विनियोगः॥

॥ गायत्री-जपः ॥

॥ध्यानम्॥

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवळच्छायैर्मुखैस्रीक्षणैः
युक्तामिन्दु-निबद्ध-रत्न-मकुटां तत्त्वार्थ-वर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गदाम्
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥
यो देवः सविताऽस्माकं धियो धर्मादि-गोचरे।
प्रेरयेत् तस्य यद्भर्गस्तद्वरेण्यमुपास्महे॥
औं।
भूर्भुवः सुर्वः।

तथ्मंवितुर्वरेंण्यम्। भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयांत्॥

प्राणायामः।

॥ गायत्री-उपस्थानम्॥

आदित्य उपस्थानं करिष्ये।

उत्तमे शिखंरे देवी भूम्यां पंवत्मूर्धनि। ब्राह्मणैभ्यो ह्यंनुज्ञानं गुच्छ देवि यथा सुंखम्॥

॥ माध्याह्निक सूर्योपस्थानम्॥

आ सत्येन रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो यांति भुवंना विपश्यन्। उद्वयं तमंसस्परि पश्यंन्तो ज्योतिरुत्तंरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगंन्म ज्योतिंरुत्तमम्। उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्। चित्रं देवानामुदंगादनीकं चक्षुंर्मित्रस्य वर्रणस्याग्नेः। आ प्रा द्यावां पृथिवी अन्तरिक्ष्ण सूर्य आत्मा जगंतस्तस्थुषेश्च। तचक्षुंर्देवहिंतं पुरस्तौच्छुऋमुचरंत्॥ पश्येम शरदेः शतं जीवेम शरदेः शतं नन्दाम शरदेः शतं मोदाम शरदेः शतं भवाम शरदेः शत १ शृणवाम शरदेः शतं प्रब्रंवाम शरदेः शतमजीताः स्याम शरदेः शतं ज्योक सूर्यं दृशे। य उदंगान्महतोर्णवाहिभाजंमानः सरि्रस्य मध्याथ्स मां वृषभो लोहिताक्षः सूर्यो विपश्चिन्मनंसा पुनातु॥

॥ समष्ट्यभिवादनम्॥

सन्ध्यायै नमः। (East) सावित्रयै नमः। (South) गायत्र्ये नमः। (West) सरस्वत्यै नमः। (North) सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमो नमः। (Fast) कामोऽकार्षीन्मन्युरकार्षीन्नमो नमः। अभिवादये () (त्रयार्षेय) प्रवरान्वित () गोत्रः (आपस्तम्ब) सुत्रः यजुःशाखा अध्यायी () शर्मा नामाहम् अस्मि भोः॥ नमस्कारः।

॥दिग्देवता-वन्दनम्॥

प्राच्ये दिशे नमः। (East) दक्षिणाये दिशे नमः। (South) प्रतीच्ये दिशे नमः। (West) उदीच्ये दिशे नमः। (North)

ऊर्ध्वाय नमः। (up)
अधराय नमः। (down)
अन्तरिक्षाय नमः। (up)
भूम्यै नमः। (down)
ब्रह्मणे नमः। (up)
विष्णवे नमः। (down)
मृत्यवे नमः।

॥ यम-वन्दनम्॥

यमाय नमः (South)

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च। वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च॥ औदुम्बराय दभ्नाय नीलाय परमेष्ठिने। वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः॥

चित्रगुप्ताय वै नम ओं नम इति॥

॥ सर्प-रक्षा॥

(North)

नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि। नमोऽस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विषसर्पतः॥ सर्पापसर्प भद्रं ते गच्छ सर्प महाविष। जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मरन्॥ जरत्कारोर्जरत्कार्वां समुत्पन्नो महायशाः। अस्तीकः सत्यसन्धो मां पन्नगेभ्योऽभिरक्षतु॥ पन्नगेभ्योऽभिरक्षत्वोन्नम इति॥

॥ हरिहर-वन्दनम्॥

(North)

ऋत र सत्यं पेरं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गंलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः॥ विश्वरूपाय वै नम ओं नम इति॥

॥ सूर्यनारायण-वन्दनम्॥

(East)

नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसृति-स्थिति-नाश-हेतवे। त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरिश्चि-नारायण-शङ्करात्मने ॥ ध्येयः सदा सवितृमण्डल-मध्यवर्ती नारायणः सरसि-जासन-सन्निविष्टः। केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचकः॥ शङ्ख-चऋ-गदापाणे द्वारकानिलयाच्युत। गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागतम्॥ आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति॥ श्री केशवं प्रतिगच्छत्यों नम इति॥ अभिवादये () (त्रयार्षेय) प्रवरान्वित () गोत्रः (आपस्तम्ब) सूत्रः यजुःशाखा अध्यायी () शर्मा नामाहम् अस्मि भोः॥

नमस्कारः।

॥ समर्पणम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

आचमनम्।

॥ रक्षा ॥

अद्या नों देव सवितः प्रजावंथ्सावीः सौभंगम्। परां दुःष्वप्नियः सुव। विश्वांनि देव सवितर्दुरितानि परां सुव। यद्भद्रं तन्म आ सुव। ॥इति माध्याह्निकस्-उत्तरभागः॥

॥सायं सन्ध्यावन्दनम्॥

(Begin facing North)

॥ आचमनम्॥

(कुक्कुटासने)

अच्युताय नमः। अनन्ताय नमः। गोविन्दाय नमः।

द्धिः परिमृज्य।

॥ अङ्गवन्दनम्॥

- কথাৰ (touch right cheek with right thumb)
- २. नारायण (touch left cheek with right thumb)
- ३. माधव (touch right eye with right ring finger)
- ४. गोविन्द (touch left eye with right ring finger)
- ५. विणो (touch right nostril with right index finger)
- ६. मध्सूदन (touch left nostril with right index finger)
- ७. त्रिविक्रम (touch right ear with right little finger)
- ८. वामन (touch left ear with right little finger)
- ९. श्रीधर (touch right shoulder with right middle finger)
- १०. हपोकेश (touch left shoulder with right middle finger)
- ११. पद्मनाभ (touch navel with right four fingers)
- १२. दामोदर (touch the centre of the head with all five fingers)

॥विघ्नेश्वर-ध्यानम्॥

भृगुः—अङ्गलीपृष्ठभागाभ्यां कुट्टणं पश्चवारकम्।

(strike gently on the temples five times with the back side of the fingers)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

॥ प्राणायामः॥

ओं भूः। ओं भुवः। ओ॰ सुवः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओ॰ सृत्यम्॥ ओं तथ्संवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥ ओमापो ज्योती्रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुव्रोम्॥

॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं सायं सन्ध्यामुपासिष्ये।

॥ मार्जनम्॥

ॐ श्री केशवाय नमः।

आपो हि ष्ठा मंयो भुवंः। ता नं ऊर्जे दंधातन। महरणाय चक्षंसे। यो वंः शिवतंमो रसंः। तस्यं भाजयतेह नंः। उश्तीरिंव मातरंः। तस्मा अरं गमाम वः। यस्य क्षयांय जिन्वंथ। आपो जनयंथा च नः॥

ओं भूर्भुवः सुर्वः॥ (आत्म-परिषेचनम्)

॥ प्राशनम्॥

अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युंकृतेभ्यः। पापेभ्यों रक्षन्ताम्। यदह्रा पापंमकार्षम्। मनसा वाचां हस्ताभ्याम्। पद्मामुदरेण शि्षञा। अह्स्तदंवलुम्पतु। यत्किं चं दुरितं मिये। इदमहं माममृंतयोनौ। सत्ये ज्योतिषि जुहोंिम स्वाहा॥

॥ पुनर्मार्जनम्॥

आचमनम्।

द्धिकाव्णों अकारिषम्। जिष्णोरश्वंस्य वाजिनंः। सुर्भि नो मुखांकर्त्। प्रणु आयूर्षेषि तारिषत्॥

आपो हि ष्ठा मंयो भुवंः। ता नं ऊर्जे दंधातन। महरणाय चक्षंसे। यो वंः शिवतंमो रसंः। तस्यं भाजयतेह नंः। उशतीरिंव मातरंः। तस्मा अरं गमाम वः। यस्य क्षयांय जिन्वंथ। आपों जनयंथा च नः॥ ओं भूर्भुवः सुवंः॥ (आत्म-परिषेचनम्)

॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

(Turn West)

ओं भूर्भुवः सुवंः। तथ्संवितुर्वरैण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयाँत्॥

(एवं त्रिः)

॥प्रायश्चित्तार्घ्यम्॥

प्राणायामः॥

(ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं सायं सन्ध्या) कालातीतप्रायश्चित्तार्थम् अर्घ्यप्रदानम् करिष्ये॥

ओं भूर्भुवः सुवंः। तथ्संवितुर्वरैण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥

(आत्मप्रदक्षिणं परिषेचनं च)

॥ ऐक्यानुसन्धानम्॥

असावादित्यो ब्रह्म। ब्रह्मैवाहमस्मि॥

ध्यानम्॥

(Face North Again)

आचमनम्।

॥देवतर्पणम्॥

॥ नवग्रहदेवता-तर्पणम्॥

- १. आदित्यं तर्पयामि।
- २. सोमं तर्पयामि।
- ३. अङ्गारकं तर्पयामि।
- ४. बुधं तर्पयामि।
- ५. बृहस्पतिं तर्पयामि।
- ६. शुक्रं तर्पयामि।
- ७. शनैश्चरं तर्पयामि।
- ८. राहुं तर्पयामि।
- ९. केतुं तर्पयामि।

॥ केशवादि-तर्पणम्॥

- १. केशवं तर्पयामि।
- २. नारायणं तर्पयामि।
- ३. माधवं तर्पयामि।
- ४. गोविन्दं तर्पयामि।
- ५. विष्णुं तर्पयामि।
- ६. मधुसूदनं तर्पयामि।
- ७. त्रिविऋमं तर्पयामि।
- ८. वामनं तर्पयामि।
- ९. श्रीधरं तर्पयामि।
- १०. हृषीकेशं तर्पयामि।
- ११. पद्मनाभं तर्पयामि।
- १२. दामोदरं तर्पयामि।

आचमनम्।

॥इति सायं सन्ध्यावन्दन-पूर्वभागः॥

॥सन्ध्यावन्दन-उत्तरभागः॥

॥ जप-सङ्कल्पः॥

(Face West)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणायामः।

ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं सायं सन्ध्या-गायत्री-महामन्त्र-जपं करिष्ये।

॥ प्रणवजपः—प्राणायामः ॥

प्रणवस्य ऋषिर्ब्रह्मा। देवी गायत्री छुन्दः। परमात्मा देवता। भूरादिसप्त व्याहृतीनाम् अत्रि-भृगु-कुत्स-वसिष्ठ-गौतम-काश्यप-आङ्गिरस ऋषयः।

गायत्री-उष्णिक्-अनुष्टुप्-बृहती-पङ्की-त्रिष्टुप्-जगत्यः छन्दांसि।

अग्नि-वायु-अर्क-वागीश-वरुण-इन्द्र-विश्वेदेवा देवताः। प्राणायामे विनियोगः॥

ओं भूः। ओं भुवः। ओ॰ सुवः। ओं महः। ओं जनः।

ओं तपः। ओ॰ स्त्यम्॥ ओं तथ्संवितुर्वरैण्यं भर्गों देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥ ओमापो ज्योती्रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भवः सुव्रोम्॥

॥ गायत्री-आवाहनम्॥

आयात्वित्यनुवाकस्य वामदेव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। गायत्री देवता।

आयांतु वरंदा देवी अक्षरं ब्रह्मसम्मितम्। गायत्रीं छन्दंसां मातेदं ब्रह्म जुषस्वं नः॥

ओजोंऽसि सहोंऽसि बलंमसि भ्राजोंऽसि देवानां धाम् नामांसि विश्वंमसि विश्वायुः सर्वमिस सर्वायुरिभभूरों गायत्रीमावाहयामि सावित्रीमावाहयामि सरस्वतीमावाह-यामि सावित्र्या ऋषिर्विश्वामित्रः। निचृद्गायत्री छन्दः। सविता देवता।

गायत्री-जपे विनियोगः॥

॥ गायत्री-जपः॥

॥ध्यानम्॥

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवळच्छायैर्मुखैस्रीक्षणैः
युक्तामिन्दु-निबद्ध-रत्न-मकुटां तत्त्वार्थ-वर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गदाम्
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥
यो देवः सविताऽस्माकं धियो धर्मादि-गोचरे।
प्रेरयेत् तस्य यद्भर्गस्तद्वरेण्यमुपास्महे॥
आँ।

भूर्भुवः सुवंः। तथ्संवितुर्वरैण्यम्।

भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥

विया या नः प्रचादयात्॥

प्राणायामः।

॥ गायत्री-उपस्थानम्॥

सायं सन्ध्या गायत्री उपस्थानं करिष्ये।

उत्तमे शिखंरे देवी भूम्यां पर्वत्मूर्धनि। ब्राह्मणैभ्यो ह्यंनुज्ञानं गुच्छ देवि यथा सुंखम्॥

॥सायं सन्ध्या सूर्योपस्थानम्॥

इमं में वरुण श्रुधी हर्वम्द्या च मृडय। त्वामंवस्युराचंके॥ तत्त्वां यामि ब्रह्मंणा वन्दंमान्स्तदाशांस्ते यजंमानो हिविर्मिः। अहंडमानो वरुणेह बोध्युरुंशश्स्म मा न आयुः प्रमोषीः॥ यचिद्धिते विशो यथा प्रदेव वरुण व्रतम्। मिनीमसि द्यविद्यवि॥ यत्कि चेदं वरुण दैव्ये जनेभिद्रोहं मनुष्यांश्वरांमसि। अचित्तीयत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनंसो देव रीरिषः॥ कित्वासो यद्विरिपुर्नदीवि यद्वां घा स्त्यमुत यं न विद्या सर्वाताविष्यं शिथिरेव देवाथां ते स्याम वरुण प्रियासंः॥

॥ समष्ट्यभिवादनम्॥

सन्ध्यायै नमः। (West) सावित्र्ये नमः। (North) गायत्र्ये नमः। (East) सरस्वत्यै नमः। (South)

सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमो नमः। (West)

कामोऽकार्षींन्मन्युरकार्षींन्नमो नमः।

अभिवादये () (त्रयार्षेय) प्रवरान्वित () गोत्रः

(आपस्तम्ब) सूत्रः यजुःशाखा अध्यायी

() शर्मा नामाहम् अस्मि भोः॥

नमस्कारः।

॥ दिग्देवता-वन्दनम्॥

प्रतीच्यै दिशे नमः। (West)

उदीच्यै दिशे नमः। (North)

प्राच्ये दिशे नमः। (East)

दक्षिणायै दिशे नमः। (South)

ऊर्धाय नमः। (up)

अधराय नमः। (down)

अन्तरिक्षाय नमः। (up)

भूम्यै नमः। (down)

ब्रह्मणे नमः। (up)

विष्णवे नमः। (down) मृत्यवे नमः।

॥यम-वन्दनम्॥

यमाय नमः (South)

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च। वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च॥ औदुम्बराय दभ्नाय नीलाय परमेष्ठिने। वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः॥

चित्रगुप्ताय वै नम ओं नम इति॥

॥सर्प-रक्षा॥

(North)

नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि। नमोऽस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विषसर्पतः॥ सर्पापसर्प भद्रं ते गच्छ सर्प महाविष। जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मरन्॥ जरत्कारोर्जरत्कार्वां समुत्पन्नो महायशाः। अस्तीकः सत्यसन्धो मां पन्नगेभ्योऽभिरक्षतु॥ पन्नगेभ्योऽभिरक्षत्वोन्नम इति॥

॥ हरिहर-वन्दनम्॥

(North)

ऋत र सत्यं पेरं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गंलम्। ऊर्ध्वरेतं विंरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः॥ विश्वरूपाय वै नम ओं नम इति॥

॥ सूर्यनारायण-वन्दनम्॥

(West)

नमः सिवत्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूति-स्थिति-नाश-हेतवे। त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरिश्चि-नारायण-शङ्करात्मने ॥

ध्येयः सदा सवितृमण्डल-मध्यवर्ती नारायणः सरसि-जासन-सन्निविष्टः। केय्रवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचकः॥ शङ्ग-चऋ-गदापाणे द्वारकानिलयाच्युत। गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागतम्॥ आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति॥ श्री केशवं प्रतिगच्छत्यों नम इति॥ अभिवादये () (त्रयार्षेय) प्रवरान्वित () गोत्रः (आपस्तम्ब) सुत्रः यजुःशाखा अध्यायी () शर्मा नामाहम् अस्मि भोः॥ नमस्कारः।

॥ समर्पणम्॥

(Sit down facing North)

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

आचमनम्।

॥ रक्षा ॥

अद्या नों देव सवितः प्रजावंथ्सावीः सौभंगम्। परां दुःष्वप्नियः सुव। विश्वांनि देव सवितर्दुरितानि परां सुव। यद्भद्रं तन्म आ सुव। ॥इति सायं सन्ध्यावन्दन-उत्तरभागः॥

This PDF was downloaded from http://stotrasamhita.github.io.

 ${\sf GitHub: http://stotrasamhita.github.io \mid http://github.com/stotrasamhita.github.io \mid http://github.com/stotrasamhita.github.io}$

Credits: http://stotrasamhita.github.io/about/